भारत कृषि एवं ऋषि प्रधान देश, धर्म क्या है ?

भारत कृषि एवं ऋषि प्रधान देश, धर्म क्या है ?

भारतीय संस्कृति इतनी प्रचीन है कि इसका अनुमान लगाना असान बात नहीं । भारत एक ऐसा देश है, जहाँ सर्वप्रथम सभ्यता का विकास हुआ। भारत में श्रमण एवं वेदिक संस्कृति भारत के उत्थान का मूल कारण है। वेदिक संस्कृति समय को चार भागों में बांटता है, सत्य युग, द्वापर युग, त्रेता युग और कलयुग जबकि श्रमण संस्कृति इसको भोगयुग के पश्चात धर्म का आदिकाल और अवसर्पिणी काल के **दुः**षमकाल के अन्त में धर्म का विच्छेद होने से इसका अन्तकाल भी कहा जा सकता है, इसके तृतिय आरक के अन्त में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव हुए और उन्हीं से विधिपूर्वक श्रुतधर्म का प्रादुर्भाव हुआ। भगवान ऋषभदेव के समय सब इच्छाओं का निराकरण कल्पवृक्ष से होता था, जब कल्पवृक्ष का अभाव हुआ तो इच्छाओं की पूर्ति असंभव हो गई और ऋषभदेव ने शासकीय कार्यभार सम्भालते हुए असि, मसि और कसि का ज्ञान दिया। जिससे अस्त्र ज्ञान, व्यापार और कृषक (खेती बाड़ी) का ज्ञान दिया जिससे अपनी अवश्यकताओं को पूर्ण कर सके । उसकाल के मानव सधारण बुद्धि के थे, ऋषभदेव ने अपने पुत्र भरत को राज्य देकर सर्वप्रथम ऋषि परम्परा का अगाज किया इनके साथ 4000 मानव सन्यास लेकर ऋषि (सन्यासी) बन गये, जिससे कृषि के साथ ऋषि युग भी आरम्भ हो गया। वेदिक संस्कृति इसको सत्ययुग का नाम देती है। ऋषि, मुनि, सन्यासी घोर तपस्या कर अपनी आत्मा का उत्थान (अनादिकाल से

भ्रमण करती आत्मा को मुक्ती) से मोक्ष प्राप्त करते थे। जो देश की रक्षा करे उसका धर्म था रक्षा करना, जो विद्वान थे उनका धर्म था जनता को अवगत करना, और कृषक का धर्म था अनाज पैदा कर सब की भूख मिटाना। अधिकांश अपना-अपना धर्म निभाकर अन्त में सन्यासी (ऋषि) एवं मुनि (मौन रहकर तप करना) धर्म अपना कर अपनी आत्मा को शुद्ध कर निर्वाण प्राप्त करते थे। जिससे भारत कृषि एवं ऋषि प्रधान देश कहलाया।

जैन धर्म का उद्भव की स्थिति स्पष्ट है। जैन ग्रंथो के अनुसार धर्म वस्तु का स्वाभाव समझाता है, इसलिए जब से सृष्टि है तब से धर्म है, और जब तक सृष्टि है, तब तक धर्म रहेगा, अर्थात् जैन धर्म सदा से अस्तित्व में था और सदा रहेगा। इतिहासकारो द्वारा जैन धर्म का मूल भी सिन्धुघाटी की सभ्यता से जोड़ा जाता है जो हिन्द आर्य प्रवास से पूर्व की देशी आध्यात्मिकता को दर्शाता है। सिन्धु घाटी से मिले जैन शिलालेख भी जैन धर्म के सबसे प्राचीन धर्म होने की पुष्टि करते है। अन्य शोधार्थियों के अनुसार श्रमण परम्परा ऐतिहासिक वैदिक धर्म के हिन्द-आर्य प्रथाओं के साथ समकालीन और पृथक हुआ।

जैन ग्रंथो के अनुसार वर्तमान में प्रचलित जैन धर्म भगवान आदिनाथ के समय से प्रचलन में आया। यहीं से

जो तीर्थंकर परम्परा प्रारम्भ हुई वह भगवान महावीर या वर्धमान तक चलती रही जिन्होंने ईसा से ५२७ वर्ष पूर्व निर्वाण प्राप्त किया था। भगवान महावीर के समय से पीछे कुछ लोग विशेषकर यूरोपियन विद्वान् जैन धर्म का प्रचलित होना मानते हैं। जिस प्रकार बौद्धों में २४ बुद्ध है, वैदिक में विष्णु के 24 अवतार हैं उसी प्रकार जैनों में भी २४ तीर्थकार है। परिभाषा जैन शब्द का अर्थ : जैन शब्द जिन शब्द से बना है। जिन बना है 'जि' धातु से जिसका अर्थ है जीतना। जिन अर्थात जीतने वाला। जिसने स्वयं को जीत लिया उसे जितेंद्रिय कहते हैं।

ऐतिहासिक रूपरेखा

जैन मान्यता के अनुसार जैन धर्म अनादि काल से चला आया है अनंत काल तक चलता रहेगा। इस धर्म का प्रचार करने के लिये समय-समय पर अनेक तीर्थंकरों,ऋषियों का आविर्भाव होता रहता है। जैन धर्म के २४ तीर्थंकरों में ऋषभ प्रथम और महावीर अंतिम तीर्थंकर थे। जैन धर्म इस चौबीसी के प्रवर्त्तक भगवान ऋषभदेव मानते हैं जो प्रथम तीर्थंकर हुए और अन्तिम चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर हुए । वैदिक परम्परा भी 24 अवतार मानती है इनके धार्मिक विधान जल स्नान,मूर्तिपूजा,यज्ञ एवं बलिप्रथा के आडम्बरों से भरा है और ईश्वरवादी मान्यता है जबकि हमारी संस्कृति आडम्बर हीन

आत्मार्थी संस्कृति है । जो अन्यमतावलम्बी जैनधर्म को अर्वाचीन बतलाते है और अपने धर्म को प्रचीन बतलाकर जैनों को श्रद्धाहीन कहते हैं उन्हे प्रचीन ग्रन्थ वेद, स्मृति और पुराणों के तथ्य को समझना चाहिए जिन्हें झुठलाया नहीं जा सकता ।

ॐ नमो•र्हन्तो ऋषभो वा, ॐ ऋषभं पवित्रम् ।

यजुर्वेद अ 25, मंत्र 16

ऋषभ सर्वश्रेष्ठ पवित्र हैं,अरिहन्त ऋषभ को नमस्कार करता हूँ।

ॐ त्रैलोक्यप्रतिष्ठिताना चतुर्विंशतितींथकराणंम् ।

ऋषभादिवद्धर्मानान्तानां , सिद्धानां शरणं प्रपद्ये ।। ऋग्वेद

ऋषभदेव से वर्द्धमान पर्यन्त जो चौबीस तीर्थकर तीन लोक में प्रतिष्ठत हैं,मैं उनकी शरण ग्रहण करता हूं।

जैन धर्म आत्मा को महत्व देता है और आत्मा आठ कर्मों से लिप्त अनादिकाल से भव भ्रमण कर रही है, कभी मनुष्य गति, कभी देव गति, कभी त्रियञ्च गति और कभी वनस्पति में कर्मानुसार भ्रमण करती आई है और करती रहेगी जब तक आत्मा उपर लपटे आठ कर्मों को क्षय नहीं कर लेती, क्षय करने के पश्चात केवल्यज्ञान की प्राप्ति कर तीन लोक के ज्ञाता त्रिलोकी नाथ हो जाते है और आयुष्य कर्म पूर्ण होने पर सिद्ध बुद्ध मोक्ष गामी हो कर आवगमन से मुक्त हो जाते हैं ।

न कर्तृत्वं न कर्माणि, लोकस्य सृजति प्रभुः।

न कर्मफलसंयोगं, स्वाभावस्तु प्रवर्त्तते ।।

श्रीमद्भागवत ,अध्याय-5

प्रभु न किसी के कृत्तृत्व को उत्पन्न करता है न सरजता है न फल देता है, यह सब काम स्वभाव से होते हैं। संचित कर्मों के उदय से ही सुख-दुःख का अनुभव होता है, कोई किसी का साथी नहीं। मनुष्य जन्म बड़े पुनः कर्म से मिलता है और उच्च कुल, आर्य क्षेत्र पूर्व जन्म के शुभ कर्मों का फल है। परसुराम और विश्वामित्र चण्डाल कुल में पैदा हुए और घोर तपस्या से वह विश्व विख्यात ऋषि बने। देव, गुरु, धर्म की अराधना से हम पुनः कर्म् अर्जित कर उच्च गति प्राप्त कर सकते हैं यदि मनुष्य जन्म पा कर भी हम बुरे भाव रखते हैं दुनिया का विनाश अपना स्वार्थ सिद्ध जन्मों-जन्मो तक नर्क में धकेल देगा। यह समझने का प्रयास करें- **हम दुःखी क्यों होते हैं**, अनन्ता जन्मों के भव-भ्रमण में न जाने कौन-कौन से कर्म बन्ध एवं हिंसा कर चुके हैं जिसका भुगतान भी समय-समय पर होता रहता है जिसमें भाव हिंसा हर समय होती रहती है। जबकि वैदिक धर्म जगत कि उत्पति ईश्वर को मानती है और जब जब धरती पर संकट आता है ईश्वर अवतार ग्रहण कर धरती पर आता है जिससे विश्णु के चौबीस अवतार जिसमें 23 अवतार हो चुके हैं और चौबीसवां भगवान कल्कि के रुप में अवतार ग्रहण करेगें। इन चौबीस अवतारों मे आठवा अवतार ऋषभदेव को मानते है और यह भी मानते है कि ऋषभदेव मोक्ष पधार गये। मोक्ष से जीव कभी मृत्यलोक में पुन्य जन्म नहीं लेता। वह राम जी को और महात्मा बुद्ध को भी विष्णु जी का अवतार मानती है।

वैदिक धर्म में भगवान राक्षसों एवं दैत्यों का संहार करते हैं। जबकि जैन धर्म में सभी तीर्थंकर राजघरानों से सुख स्मृद्धि त्याग कर आत्मा पर लिप्टे कर्मों को क्षय करने के लिए कठिन साधना से आत्मा को निर्मल कर सिद्ध बुद्ध मोक्ष प्राप्त करते है, वह अपने जीवनकाल में न हिंसा करते है, न करवाते हैं और न ही करने वाले की अनुमोदना करते है।

वैदिक धर्म में यज्ञ की बहुत महत्व देते हैं जिनका उल्लेख वेदों में भी मिलता है। यज्ञ का अर्थ तप भी होता है जिससे अपने शरीर को तपाया जाए और अपने निकृष्ट कर्मों की अहूति दी जाए, परन्त कुछ महत्वाकांक्षियो ने यज्ञ को अग्नि में समग्री डाल कर वातावरण शुद्धि के लिए जानवरों की आहूति देना मान लिया है। भगवान विष्णु को बुद्ध का अवतार भी मानते हैं कि भगवान बुद्ध ने यज्ञों का विरोध किया। अब यह शंका पैदा होती है कि भगवान विष्णु कैसे यज्ञ में जानवरों की अहूति देना मान सकते हैं। 16 वां अवतार विष्णु जी का हयग्रीव अवतार मानते हैं क्योंकि ब्रह्मा जी के वेद राक्षस चुराकर ले गये।ब्रह्मा जी का ज्ञान श्रुतज्ञान था जिसको कोई चुरा नहीं सकता, इसका यह भी अर्थ निकाला जा सकता है कि ब्रह्मा जी के बनाए हुए वेदों को कुछ महत्वाकांक्षियो (राक्षसों) ने उनका स्वरुप ही बदल दिया। राक्षस कौन-रावण को राक्षस कहा जाता है जब कि वह शिव जी का अनन्य भक्त और उन की तपस्या कर शक्ति प्राप्त की, सीता जी का अपहरण किया परन्तु कोई अनाचार नहीं किया। जबकि आज के राक्षस जिनके घर में भी मां,

बहन,बेटियां होने के बावजूद देश की बेटियों से अनाचार करते हैं फिर उनको जला देते हैं या मार देते हैं फिर भी निर्दोष होने की याचना करते हैं । सृष्टी आत्मार्थी है इसको बनाने वाला कोई ईश्वर नहीं यह स्वचलित प्राक्रिया है। **तपो राज्य और राज्यों नर्क,** धार्मिक ग्रन्थ ऐसा कहते हैं, राज्य करते अधिकारी गण कुछ ऐसे निर्णय ले जाते हैं जिससे अधिकांश जनता दुःखी हो जाती है और वह अपना भवभ्रमण बढ़ा लेते हैं।

धर्म क्या है. यह समझना आवश्यक है। मस्तिक पर टिका लगाना, मन्दिर में घंटे बजाना, पूजा अर्चना करना, मस्जिद में अजान, यह सब धर्म की क्रिया हो सकती है परन्तु धर्म नहीं, धर्म जिससे किसी को दुःख न पहुँचे, **अहिंसा परमो धर्मः।।** वही सच्चा धर्म है।

आजकल धर्म की परिभाषा ही बदल गई है, विश्व में जो भी कलह-क्लेष, तकरार एवं युद्ध होते है वह सब धर्म के नाम पर हो रहें हैं।

जो भी गुनाह होतें हैं, वे सब धर्म के नाम होते हैं।
दुनिया में पूछो उनसे जाकर, इससे तबाह होते हैं।

भारत ऋषियों मुनियों का देश और पंजाब इसका मुख्य द्वार है, जितने भी हमलावर भारत में आए सर्वप्रथम पंजाब ने उनका डटकर विरोध किया। जिससे पंजाब के निवासी परिश्रमी और स्वभिमानी हैं। पंजाब बहुत बड़ा और खुशहाल प्रान्त था, पंजाब की भूमि पाँच नदियों के जल से सिंचाई के उत्तम साधन से फसलें लहलहराती रहीं। पंजाब का विभाजन

होने के पश्चात जो भी जनता उजड़ कर आई, उस ने अनथक प्रयास कर पुनः खुशहाली का मार्ग अपनाया। 1964-65 में भारत की जनसंख्या लगभग 40-45 करोड़ थी और अनाज की पूर्ति नहीं होती थी गेहूँ आयात करना पड़ता था । जनसंख्या एक अरब तीस करोड़ हो गई, भूमि पर नगर विकास हो गये, उद्योगिक क्षेत्र बन गये परन्तु कृषकों का धर्म ही मेहनत रंग लाई कि आज हरित क्रान्ति से पंजाब पैदावार में सब से अग्रिनि है, पूरा भारत पेट भर रोटी खाता है और निर्यात भी अनाज होता है। कृषक अपने कृतव्य धर्म को निभा रहा है।

आजकल भारत में धर्म एक वोट प्राप्ति का साधन भी बन चुका है, स्वतन्त्र भारत में लोकतन्त्र की स्थापना की गई और भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री ने लोकतन्त्र की परिभाषा लिखी- **जनता से, जनता के लिए, जनता द्वारा** सरकार का गठन, प्रथम मन्त्रीमन्डल जो बनाया गया उसमें डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी और डॉ बी. आर अम्बेदकर को भी शामिल किया गया जिनकी विचारधारा कांग्रेस के अनुरूप नहीं थी पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने कहा लोकतन्त्र में विपक्ष का होना बहुत जरूरी है, जिससे कार्य प्रणाली सतर्क रहेगी। संविधान निर्माता डॉ अम्बेदकर जात-पात के विरोधी थे और भारत एक धर्म निरपेक्ष देश घोषित कर दिया, जो बहुत भारी चूक हो गई, धर्म तो हर मजहब का एक ही है मानवता, चाहिए था सम्प्रदाय निरपेक्ष, धर्म (सम्प्रदाय) व्यक्ति का निजगुण है वह जैसा चाहे, उसे अपनाए । संविधान की आढ़ में धर्म के नाम

अनेकों पार्टियां बन गई जो लोकतान्त्रिक न होकर परिवारिक बन गई। यह देश का दुर्भाग्य है कि सर्वप्रथम कांग्रेस की आंतरिक लोकतन्त्र व्यवस्था लोकतन्त्र के नायक की बेटी प्रधानमन्त्री श्री मती इन्दिरागांधी ने ही ध्वस्त कर दी, नीति का विरोध करने वाले कांग्रेस से बाहिर हो गये, कुछ चल बसे और चमचागिर चहूँ ओर नजर आने लगे। प्रान्तीय पार्टियां हावी होने लगी। यहाँ तक की अपराधी वर्ग चुनाव जीत कर सांसद, विधायक अधिक हो गये, ऐसा सब पार्टियों में है। वर्तमान सांसद में 43% सांसद अपराधी हैं, **यथा राजा तथा प्रजा** तो लोकतन्त्र कैसे बचेगा। वर्तमान प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी को समस्त भारत एक न्यायप्रिय नेता मानती है, वर्ष में दो बार नवरात्रों का व्रत, हर जगह जहाँ गये वहाँ के मन्दिर में पूजा अर्चना की और ऐसा ही कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष श्री राहूल गांधी जब चुनाव आते हैं तो मन्दिर- मस्जिद याद आती है कभी जनेऊ पहन कर पूजा कर ली, यह सब लोकतन्त्र का दिवाला निकालने वाले धर्म, जनता को मूर्ख बनाने के लिए ही की जाते हैं। वास्तव में जनता की पीड़ा समझने वाला कोई नहीं,, तो लोकतन्त्र कैसा ? अब है स्वार्थतन्त्र एवं षडयन्त्र की राजनीति। अब लोकतन्त्र की परिभाषा **राजनेताओं से, राजनेताओं द्वारा, ऱाजनेताओं के लिए हो गई है।**

दुर्भाग्य से महामारी कोविड-19 और लॉकडाऊन सब कुछ अस्त-व्यस्त कर दिया । परन्तु भारत के किसानों ने कृषि

पर ही ध्यान केन्द्रित किया और जब काम बन्द हो गये तो कृषि उत्पादन बराबर चलता रहा और समस्त भारतीयों के लिए खाद्य समग्री उपलब्ध होती रही। कृषक ने संकटकाल में भी अपना धर्म निभाया। इसी समय तीन कृषि कानून बने, जिससे पंजाब हरियाणा एवं अन्य भारत के किसान चिन्तित है। किसान अन्दोलन चल रहा है, दिल्ली के द्वार पर चारों ओर किसान कड़कती ठंड में खुले असमान में सड़को पर डेरा डाले हुए हैं, पाँच-छः बार सरकार से वार्तालाप भी हो चुका है, परिणाम जीरो, सरकार कानून के लाभ बता रही है, किसान चिल्ला रहा है। सरकार व सरकारी मीडीया वाले किसानों को नक्सलवादी, टुकडे-टुकड़े वाले गैंग, माओवादी, आंतकवादी, पाकिस्तानी एवं खालिसस्तानी व विपक्ष को दोषी मान रहा है। अन्दोलन पूर्णतः अनुशासन में चल रहा है, मान लो कोई शरारती तत्व भी हो सकता है, जब वर्तमान सांसदों में 43% सांसद अपराधी मामलों में संलिप्त हैं तो उन पर कोई टिप्पणी नहीं होती। वह हमारे शासक हैं। वर्तमान प्रधान मन्त्री श्री नारेन्द्र मोदी जी ने तीन कार्य अति सराहनीय हैं, (1) मुस्लिम महिलों पर तीन तलाक की प्रथा से मुक्ति, (2) कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत एक ही संविधान के आधीन, (3) चीन की हैकड़ी को ध्वस्त करना। प्रधान मन्त्री जी से नम्र निवेदन हैं कि भला ही कृषि कानून लाभदायक होगें आपके अनुसार परन्तु जब भारत का किसान सहमत नही तो उन की पुकार को तो समझना लोकतन्त्र का धर्म है। किसानों के ही बेटे हैं जो सरहदों

पर -30 से -40 डिगरी पर मोर्चा संभाले हुए हैं, क्या किसी सांसद का बेटा है सरहद पर ? जनता की पुकार परमात्मा की पुकार होती है, जनता की विजय सरकार की विजय होती है।

अभी कानून चाहे रद्द न करो, अभी स्थागित कर दो और सर्वप्रथम किसानों की समस्या कुछ प्राकृतिक और कुछ सरकारी हैं, उनका समाधान ड़ूंढना परम आवश्यक है। किसान पीड़ित है फसल कम हो तो भी नुकसान यदि फसल अधिक हो गई तो भी ग्राहक कम होने से नुकसान, सब्जियां जब समय आता है तो एकदम उपलब्ध होने से बिकरी न हो तो खराब होने का भय। किसान की पुकार सुनी जाये और उसका समाधान निकाला जाए, जिससे किसान मंगता न बने और अपने अधिकार से भी वंचित न हो।

जब सरकार मानती है इसमें कुछ त्रुटियाँ है और पुनः नरीक्षण की आवश्यकता है तो स्थागित की घोषणा कर अन्धोलन समाप्त करवाया जाए, कृषि भूमि पर क़रपोरेट अधिकार रोका जाना चाहिए।

अब प्रश्न बन चुका है सम्मान का जो धर्म के विपरीत है, सम्मान होना चाहिए प्रत्येक नागरिक का, चाहे वह अरबपति हो या किसान मज़दूर । लोकतन्त्र में सब का सम्मान ही धर्म है। सरकार की पीछे हटना यह भय दिखाता है कि सदा के लिए कानून पर अन्दोलन आरम्भ हो जाएंगें। अब सरकार को चाहिए कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। सर्वप्रथम किसान की दुविधा फसल आने पर मुल्य न मिलना, कानूनी संशोधन

कर दिया जाए, जिससे किसान मंगता न रहे, सबसिडी देना किसान का अपमान है परन्तु सरकार के लिए वोट लुभावन प्रचार है। भारत में उत्तम खेती, मध्यम व्यापार, निषिद्ध चाकरी, क्योंकि किसान खेती में किसी प्रकार की बईमानी नहीं करता, वह अपने परिश्रम से देश का और अपना पेट भरता है। व्यापार में हर कोई समय का नज़ाईज लाभ उठाने को तत्पर रहता है और नौकरी पेशा तो सदा ही जी हजूर रहता है। राजनीति झूठ को सत्य बदलने के ढ़ोंग को धर्म मानता है।

राजनीति,मन्दिर, मस्जिद या गुरुद्वारा हो,मानवता का द्वारा हो।

बहुत प्रसन्नता की बात है कि राम मन्दिर बन रहा है, मन्दिर संगमरमर के पत्थरों का नहीं राम के आदर्शों का मन्दिर बनना चाहिए। श्री राम ने एक धोबी के कहने पर सीता तक त्याग दिया। क्या राम मन्दिर की दुहाई देने वाले, किसान विरोधी कानून नहीं त्याग(रोक) सकते ? पूर्व प्रधानमन्त्री श्री अटल विहारी वाजपाई के जन्म दिवस पर राजधर्म निभाए, यही सच्ची श्रद्धांजली होगी । श्री राम किसी विशेष के नहीं, समस्त भारत कें है। जय श्री राम

स्वतन्त्र जैन जालन्धर---9855285970 25.12.2020

संस्कृति और सभ्यता का केन्द्र भारत, सोने की चिड़िया कहलाने वाले भारत में उत्तम खेती मध्यम व्यापार निषिद्ध चाकरी से कृषक को सम्मान मिलता था । हजारों वर्षों की

गुलामी के पश्चात स्वतन्त्र भारत ने चारो और प्रगति की, विश्व का सबसे बड़ा लोकतन्त्र के रुप में स्थापित भारत विद्या के क्षेत्र में नारी शिक्षा के क्षेत्र अग्रणी, विडम्बना की उस भारत में कृषक जो गर्मी, सर्दी, धूप,छांव,सूखा व बाढ़, प्रकृति आपदाओं को सहन कर देश को अन्नपूर्ति करता है आज वह लचार है आज उत्तम चाकरी, मध्यम व्यापार निषिद्ध खेती बन गई, युवा किसान पढ़ा-लिखा हो गया,अपने व्यवसाय को अन्य की तुलना में वह भी चाहता है कि क्यों न मैं भी वातानुकूलित कैबिन में बैठकर जीवन व्यतीत करूं। वह किसान जो आज से लगभग 100 वर्ष पहले संयुक्त भारत (भारत,पकिस्तान, बंगलादेश) जिसकी अबादी 36 करोड़ थी का अन्नदाता आज केवल भारत जिसकी अबादी लगभग सवा अरब हो चुकी है कि अपने अनथक प्रयास अन्नपूर्ति करता है भारत को अन्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाया उसकी दशा चिन्तनीय है विडम्बना है कि सत्तर वर्षों में भारतीय नेतागण (सभी पार्टीया) कृषक को वोट बैंक समझते है। आज कृषीभूमि का क्षेत्र कम हो गया वहाँ बिल्डरस,मॉल्स, उद्योग स्थापित हो गये, कृषि उत्पादन का खर्चा कईं गुणा बढ़ गया परन्त जब अपने उत्पादन को लेकर मार्किट में जाता है तो व्यापारी पूल कर लेते है और उसका दाम कम आंकते है जिससे उसकी लागत भी पूरी नहीं होती, जैसे भीखारी कटोरा लेकर दर दर घूमता है वैसे ही कृषक अपना उत्पादन ले कर घूमता है अन्ततः श्रो अवे दाम पर मजबूर मयूस हो जाता है और कर्जाई भी, जब चुनाव आते है नेतागण तरह-तरह के प्रलोभन दे कर वोट बटोरते है और भूल जाते हैं कृषक की दशा और दिशा, कमजोर आत्मबल के कृषक

अपनी इस दुःखद जीवन लीला समाप्त करने पर मजबूर हो कर आत्म हत्या कर जाते हैं इसका एक ही कारण है कि किसान की फसल का सही दाम न मिलना, व्यपारी वर्ग किसान का शोषण करते हैं इस शोषण से बचाना ही कृषक का उद्धार है जिससे कृषक अपना आत्मसम्मान बचा सके जब बम्पर फसल आए तो कृषक को व्यापारी के दर पर न जाना पड़े बल्कि व्यापरी कृषक य़ा ऐसी ऐजन्सी बने जिस से सम्पर्क कर सही दाम पर फसल बिके। नेता गण के झूठे वायदे, अभी अभी तीन राज्यों मे कांग्रेस विजयी हुई दो लाख तक ऋण मुक्त कर दिया परन्तु अधिकतर कृषक इस लाभ से वंचित रह गए क्योंकि अल्पविधि ऋण माफ किया गया कितनी देर झूठे वायदो से सरकारे बनती बिगड़ती रहेंगी इसका स्थाई हल ढूढना होगा युवा कृषकों को आत्म निर्भर बनाने के उपाय ढूढने होगें, कृषक को सीधा व्यापार और उद्योग के साथ जोड़ना होगा, अधिक उत्पादन पर कृषि को निर्यात के साथ जोडना होगा, गांवो में कृषि संबधित उद्योग को प्रोत्साहन करना आज की आवस्यकता है।

जनता के वोट लेकर जनता पर राज कर जनता को लूटो चुनाब आने पर कुछ रियाते दे दो और कहो कि मंहगाई कम कर दी , संवधानिक संस्थाओ को पिजरे का तोता बना लो प्रजातन्त्र को तानाशाही में बदलने के प्रयास, इन्दिरा का अपातकाल, मोदी का आर्थिक अपातकाल (नोटबन्दी) जी एस टी, आर बी आई के गर्वनर, उपगवर्नर, उच्चन्यायलय के जजो की प्रैस कांफरैंस, सीबी आई अफसरों का झगड़ा, अभी अभी आया उच्यन्यायलय का राफेल पर फैसला जिसमें

बारह दिन पहले बनी अंबानी की कम्पनी को 30 हजार करोड़ का कांटरैक्ट मिल जाए और न्यायलय कुछ गलत न दिखे प्रजातन्त्र पर प्रहार नहीं तो और क्या है। दोनों राष्ट्रीय पार्टीयों में शालीनता की कमी प्रजातन्त्र के लिए चिन्ताजनक विषय है। सावधान

स्वतन्त्र जैन जालन्धर